

---

# Shri Ramakrishna Stotram

---

## श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Shri Ramakrishna Stotram

File name : rAmakRRiShNastotram5.itx

Category : deities\_misc, gurudev, rAmakRiShNa, stotra

Location : doc\_deities\_misc

Author : Bhandarakara Tryambakasharmana

Proofread by : Aruna Narayanan

Description-comments : rAmakRiShNastotramALA, stavanAnjali

Acknowledge-Permission: Ramakrishna Shivananda Mission, Varasat

Latest update : June 12, 2023

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

June 12, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्



स्वयं निर्मलं निर्मलीकर्तुमन्यान्  
अलं सिद्धमप्युच्चसिद्धिप्रयासम् ।  
प्रपन्नार्ति-नाश-प्रसन्नान्तरं तं  
भजे रामकृष्णं परब्रह्मरूपम् ॥ १ ॥

सदान्तर्लसत्सर्वसद्भाव भावं  
जगच्छान्तये विश्वधर्मप्रकाशम् ।  
मुदान्तः-प्रविष्टाखिल-स्वप्नवृन्दं  
भजे रामकृष्णं परब्रह्मरूपम् ॥ २ ॥

अविद्यान्धकारापहार-प्रहारं  
स्वभक्तानुकम्पा प्रसक्तान्तरङ्गम् ।  
अवस्थागुणादिव्यतीत स्वरूपं  
प्रभुं रामकृष्णं शिवं सन्नतोऽस्मि ॥ ३ ॥

स्मृतिः केवलं तेऽङ्गसां नाशहेतुः  
स्तुतिर्मानसं मान-सम्मोद-पूर्णम् ।  
करोति ध्रुवं दर्शनस्पर्शनादेः  
फलं भाषितुं कोऽस्त्यलं देवदेव ॥ ४ ॥

विवस्वत् प्रकाशाः पयोधेस्तरङ्गा  
यथाकाशगास्तारकाः सन्त्यमेयाः ।  
असङ्ख्यास्तथा यद्गुणानां गणास्तं  
भजे रामकृष्णं परब्रह्मरूपम् ॥ ५ ॥

विकारहेतावपि निर्विकारं  
साकारमप्याकृतिशून्यभावम् ।  
ज्ञानोपदेशैः सुकृतोपकारं  
श्री रामकृष्णं शिरसा नतोऽस्मि ॥ ६ ॥

यथाम्बुधिं यान्ति विभिन्न गङ्गा-  
स्रोतांसि धर्मा अपि देवदेवम् ।  
येनोपदिष्टं निजसाधनाभि-  
स्तं रामकृष्णं शिरसा नतोऽस्मि ॥ ७ ॥

त्वमेव साक्षाज्जगदात्मरूप-  
स्त्वमेव कार्यं परकारणं वा ।  
अनुग्रहैकार्थपरं परात्मन्  
करोम्यभीक्षणं शरणं कमन्यम् ॥ ८ ॥

इति साहित्याचार्य श्रीभण्डारकरोपाह्नेन त्र्यम्बकशर्मणा विरचितं  
“श्रीरामकृष्णस्तोत्रम्” सम्पूर्णम् ।

Proofread by Aruna Narayanan

---

—  
*Shri Ramakrishna Stotram*

pdf was typeset on June 12, 2023

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

